BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

CLASS IX - SANSKRIT

पाठ-2 स्वर्णकाकः २ भाग-दो — E-Lesson - 9 - SANSKRIT - 9 May

2. नैतादृशः स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्टः। तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा। तं निवारयन्ती सा प्रार्थयत्-तण्डुलान् मा भक्षय। मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते। स्वर्णकाकः प्रोवाच- "मा शुचः। सूर्योदयात्प्राग् ग्रामाद् बहिः पिप्पलवृक्षमनु त्वयागन्तव्यम्। अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि। प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।

सन्धिच्छेद - न + एतादृशः, स्वर्णकाकः + तया, हसन्तम् + च, रोदितुम् + आरब्धा, त्वया + आगन्तव्यम्

सरलार्थ- उसके द्वारा ऐसा सोने के पंखों वाला, चाँदी की चोंच वाला सोने का कौआ पहले नहीं देखा गया था। उसे चावलों को खाते हुए और हँसते हुए देखकर लड़की ने रोना प्रारंभ कर दिया। उसको हटाते हुए उसने प्रार्थना की- चावलों को मत खाओ। मेरी माता बहुत गरीब है। सोने का कौआ बोला- 'शोक मत करो। सूर्योदय से पहले ग्राम से बाहर पीपल के पेड़ के पीछे आना। मैं तुम्हें चावलों का मूल्य (कीमत) दे दूँगा। प्रसन्न बालिका (रात भर) सो भी नहीं पाई।

प्रश्नोत्तर I - एकपदेन उत्तरत

1) काकं तण्डुलान् खादन्तं विलोक्य का रोदितुमारब्धा?
2) कीदृशी बालिका निद्रामपि न लेभे?

II पूर्णवाक्येन उत्तरत

1) बालिकया पूर्वं कः न दृष्टः?
2) बालिका किं प्रार्थयत्?

III भाषिक - कार्यम्

i) 'रजतचञ्चुः' पदस्य विशेष्यपदं किमस्ति? (क) स्वर्णकाकः (ख) बालिका (ग) माता
ii) 'दास्यामि' क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति? (क) माता (ख) अहम् (ग) बालिका
iii) 'खिन्ना' पदस्य विपर्ययपदं चिनुत। (क) त्वया (ख) निद्राम् (ग) प्रहर्षिता
iv) 'अहं' पदं कस्मै प्रयुक्तम्? (क) काकाय (ख) बालिकायै (ग) मात्रे

Scanned with CamScanner

3 सूर्योदयात् पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता। वृक्षस्योपरि विलोक्य सा चाश्चर्यचकिता सञ्जाता यत्तत्र स्वर्णमयः प्रासादो वर्तते। यदा काकः शयित्वा प्रबुद्धस्तदा तेन स्वर्णगवाक्षात्कथितं हंहो बाले! त्वमागता, तिष्ठ, अहं त्वत्कृते सोपानमवतारयामि, तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयमुत ताम्रमयं वा! कन्या प्रावोचत - अहं निर्धनमातुर्दुहिताऽस्मि। ताम्रसोपानेनैव आगमिष्यामि। परं स्वर्णसोपानेन सा स्वर्णभवनमाससाद।

* सन्धिच्छेद - तत्र + उपस्थिता, वृक्षस्य + उपरि, च + आश्चर्यचकिता, यत् + तत्र

प्रबुद्धः + तदा, स्वर्णगवाक्षात् + कथितं, त्वम् + आगता, रजतमयम् + उत

सोपानम् + अवतारयामि, निर्धनमातुः + दुहिता + अस्मि,

ताम्रसोपानेन + एव, स्वर्णभवनम् + आससाद

* सरलार्थ - सूर्य उदय होने से पहले ही वह वहाँ पहुँच गई। पेड़ के ऊपर देखकर वह हैरान हो गई कि वहाँ सोने का महल है। जब कौआ सोकर उठा तब उसने सोने की खिड़की से कहा - अरे बालिका! तुम आ गई, ठहरो, मैं तुम्हारे लिए सीढ़ी उतार रहा हूँ, तो कहो सोने की बनी (सीढ़ी उतारूँ) या चाँदी की या ताँबे की? लड़की बोली - मैं गरीब माँ की बेटी हूँ। ताँबे की सीढ़ी से ही आ जाऊँगी। पर सोने की सीढ़ी से वह सोने के महल में पहुँच गई।

अभ्यास - I एकपदेन उत्तरत

1) स्वर्णमयः प्रासादः कुत्र वर्तते?
2) कः शयित्वा प्रबुद्धः?

II पूर्णवाक्येन उत्तरत

1) काकेन स्वर्णगवाक्षात् किं कथितम्?
2) कन्या कथं स्वर्णभवनमाससाद?

III भाषिक - कार्यम्

1) 'दृष्ट्वा' इत्यस्य पर्यायपदं चिनुत।	विलोक्य	तत्रोपस्थिता	आससाद
2) 'काकः' पदस्य क्रियापदं किमस्ति?	वर्तते	प्रबुद्धः	प्रावोचत्
3) 'अहं त्वत्कृते --' अत्र 'अहं' पदं कस्मै प्रयुक्तम्?	भवनाय	काकाय	प्रासादाय
4) 'प्रासादः' पदस्य विशेषणपदं किमस्ति?	स्वर्णमयम्	रजतमयम्	स्वर्णमयः

Youtube link :- https://youtu.be/1-60wS2H8wQ

Scanned with CamScanner

पाठ-2 स्वर्णकाकः (भाग-तीन) Lesson-4 SANSKRIT - H.W.

4. चिरकालं भवने चित्रविचित्रवस्तूनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता। श्रान्तां तां विलोक्य काकः प्राह - पूर्वं लघुप्रातराशः क्रियताम् - वद त्वं स्वर्णस्थाल्यां भोजनं करिष्यसि किं वा रजतस्थाल्याम् उत ताम्रस्थाल्याम्? बालिका व्याजहार - 'ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।' तदा सा कन्या चाश्चर्यचकिता सञ्जाता यदा स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं पर्यवेषितम्। नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती। काको ब्रूते - "बालिके! अहमिच्छामि यत्त्वं सर्वदा चात्रैव तिष्ठ, परं तव माता वर्तते चैकाकिनी। त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।"

* सन्धिच्छेद - ताम्रस्थाल्याम् + एव + अहं, च + आश्चर्यचकिता, न + एतादृक्, भोजनम् + अद्यावधि, अहम् + इच्छामि, यत् + त्वं, च + अत्र + एव, च + एकाकिनी, शीघ्रम् + एव

* सरलार्थ - बहुत देर तक भवन में अनोखी वस्तुओं को देखकर वह हैरान हो गई। उसे थका हुआ देखकर कौआ बोला - 'पहले थोड़ा नाश्ता कर लो, तुम बोलो सोने की थाली में भोजन करोगी या चाँदी की थाली में या तांबे की थाली में? लड़की बोली- 'मैं गरीब तांबे की थाली में ही भोजन करूँगी।' और तब वह लड़की हैरान हो गई, जब सोने के कौए ने सोने की थाली में भोजन परोसा। ऐसा स्वादिष्ट भोजन आज तक लड़की ने नहीं खाया था। कौआ बोला- "लड़की! मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा यहीं रहो, पर तुम्हारी माता अकेली है। तुम शीघ्र ही अपने घर जाओ।

I अभ्यास - एकपदेन उत्तरत

(1) बालिका कस्याम् भोजनम् अखादत्? (2) कीदृशानि वस्तूनि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता?

II पूर्णवाक्येन उत्तरत

बालिका किं व्याजहार?

III भाषिक - कार्यम्

(i) 'सा' सर्वनाम कस्मै प्रयुक्तम्?	बालिकायै	काकाय	भोजनाय
(ii) 'कन्यां' पदस्य विशेषणपदं किम्?	स्वर्णस्थाल्याम्	आश्चर्यचकिता	चित्रविचित्रवस्तूनि
(iii) 'खादितवती' पदस्य कर्तृपदं किम्?	स्वादु	माता	बालिका

CS Scanned with CamScanner

5. इत्युक्त्वा काकः कक्षाभ्यन्तरात्तिस्त्रो मञ्जूषाः निस्सार्य तां प्रत्यवदत् - "बालिके! यथेच्छं गृहाण मञ्जूषामेकाम्।" लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितम् इयदेव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्।

गृहमागत्य तया मञ्जूषा उद्घाटिता, तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता तद्दिनाद्धनिका च सञ्जाता।

* सन्धिच्छेद - इति + उक्त्वा, कक्षाभ्यन्तरात् + तिस्त्रः, यथा + इच्छं, मञ्जूषाम् + एकाम्, इयत् + एव, गृहम् + आगत्य, तत् + दिनात् + धनिका

* सरलार्थ - ऐसा कहकर कौए ने कमरे के अंदर से तीन बक्से निकाल कर उसे कहा - "बालिका! (अपनी) इच्छा के अनुसार एक बक्सा ले लो।" सबसे छोटा बक्सा लेकर लड़की बोली - 'इतना ही है मेरे चावलों का मूल्य।'

घर आकर उसने बक्सा खोला, उसमें बहुमूल्य हीरों को देखकर वह खुश हो गई और उस दिन से अमीर हो गई।

अभ्यास -

I एकपदेन उत्तरत -

(I) कः कक्षाभ्यन्तरात् तिस्त्रो मञ्जूषाः आनयत्?

(II) बालिका कां मञ्जूषां अनयत्?

II पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(I) कन्या मञ्जूषायां कानि व्यलोकयत्?

(II) कन्या काकाय किं कथितम्?

III भाषिक - कार्यम् -

(I) 'मञ्जूषाः' पदस्य विशेषणपदं किमस्ति?	तिस्त्रः	काकः	धनिका
(II) 'प्रत्यवदत्' क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति?	मञ्जूषाः	ताम्	काकः
(III) 'तया' सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?	बालिकायै	मञ्जूषायै	काकाय
(IV) 'निर्धना' पदस्य विपर्ययपदं किमस्ति?	लघुतमां	धनिका	उद्घाटिता

-x-

CS Scanned with CamScanner